P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-2* (Part-1) October- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

भगवती चरण वर्मा के उपन्यास 'चित्रलेखा' में पाप और पुण्य का चित्रण

सारांश

ईश्वर द्वारा निर्मित अंतरात्मा तथा किसी विभाजक रेखा द्वारा किए गये पाप और पुण्य को लेखक अत्यंत स्पष्टता से नकारा देता है। उपन्यास की भूमिका में ही वह कह देता है, अंतरात्मा ईश्वर द्वारा निर्मित नहीं है समाज द्वारा निर्मित है जिसको समाज, अनुचित समझता है। अर्थात् नैतिकता की सर्वांगपूर्ण परिभाषा नहीं हो सकती बल्कि देश, काल के अनुसार बदलती रहती है इसी आधार पर पाप किसी कर्म विशेष का नाम नहीं है। बल्कि ''संसार में पाप कुछ भी नहीं है, वह केवल मनुष्य के दृष्टिकोण की विषमता का दूसरा नाम है।''

मुख्य शब्द : काम्य, पाप–पुण्य, अभिलाषी, योग साधना।

रमेश कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग,
जननायक चौ0 देवीलाल
कॉलेज ऑफ एजुकेशन,
सिरसा, हरियाणा

ममता
शोधार्थी
हिन्दी विभाग
दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार
सभा, चेन्नई, तमिलनाडु

प्रस्तावना

भगवती चरण वर्मा का उपन्यास 'चित्रलेखा' का 1934 में प्रकाशित उपन्यास है। अक्सर व्यक्ति के मन में प्रश्न उत्पन्न होता है कि आखिर पाप पुण्य क्या है और इसकी उत्पत्ति कैसे होती है ? 'चित्रलेखा' उपन्यास जिसमें महाप्रभु रत्नाम्बर मानो एक गहरी निद्रा से चौंक उठे। उन्होंने श्वेतांक की ओर बड़े ध्यान से देखा ''पाप'' बड़ा कठिन प्रश्न है वत्स! पर साथ ही बड़ा स्वभाविक।

अध्ययन के उद्देश्य

1. पाप और पुण्य क्या है?
2. पाप और पुण्य का चिन्तन।
3. क्या आपके जीवन से पाप को मिटाया जा सकता?
4. पाप और पुण्य से संबंधित विचार धारा।
5. विभिन्न परिस्थितियों में व्यक्ति का विभिन्न दृष्टिकोण किस प्रकार होता है?

साहित्यावलोकन

रत्नाम्बर ने कहा –'श्वेतांक' यदि तुम पाप को जानना ही चाहते हो, तो तुम्हें संसार में ढूँढ़ना पड़ेगा। हमारे बीच यह धारणा है कि सांसारिक जीवन ही पाप की उत्पत्ति का एक केन्द्र होता है और अगर किसी ने इस सांसारिक जीवन से सन्यास ले लिया है तो हम ये मान लेते हैं कि उसका जीवन से पाप का नामोनिशान मिट चुका होगा।

पुण्य क्या है, पुण्यवान जीवन, मृत्यु के उपरान्त व्यक्ति को स्वर्गलोक ले जाता है, परन्तु एक बार पुण्य समाप्त हो जाए, तो व्यक्ति को पृथ्वी पर पुनः अगला जन्म लेना पड़ता है। इस कारण पुण्य भी एक प्रकार का बन्धन है। केवल साधना ही हमें मोक्ष तक ले जाती है। अब प्रश्न यह भी उठता है कि पाप व पुण्य को परिभाषित करने वाला कौन है? स्वर्ग लोक किस ने देखा है। बहुत लोगों ने इसे परिभाषित करने की कोशिश की है। लेकिन जिस प्रकार हमारी धारणा अलग–अलग है उसी प्रकार पाप व पुण्य को भी अलग–अलग प्रकार से परिभाषित किया है।

'चित्रलेखा' उपन्यास की समस्या पाप–पुण्य की है और उस समस्या का समाधान इस उपन्यास के शिल्प विधान से प्रमुख रूप से जुड़ा है। समस्या का समाधान महाप्रभु रत्नांबर नीरस ढंग से विश्लेषण करते दिखाई देते हैं। वे अपने दोनों शिष्यों को इसका उत्तर पाने के लिए जीवन के अलग–अलग कर्म क्षेत्र में भेज देते हैं। श्वेतांक और विशालदेव ब्रह्मचर्य जीवन से निकलकर सांसारिक जीवन में प्रवेश करते हैं। दो विभिन्न परिस्थितियों में जन्मे दो व्यक्ति (बीजगुप्त तथा कुमारगिरि) जीवन के दो भिन्न दृष्टिकोणों को अपनाते हुए 'भोग' और 'योग' को अपना काम्य समझते हैं। एक भोगी होते हुए भी सांसारिकता से असंपृक्त है। तो दूसरा संसार को छोड़ देने का दावा करने के बाद भी ज्ञान

और अहंकार के दंभ में लिपटा हुआ, एक भोगी का जीवन जीने का अभिलाषी है। वर्मा जी ने बड़ी कुशलता पूर्वक दोनों के जीवन की असलियत को उकसाकर समाज के सामने रखने के लिए चित्रलेखा के रूप में मोहक, प्रभावी, सशक्त, तार्किक, दार्शनिक आदि कई पहलुओं का व्यक्तित्व निर्माण किया है। बीजगुप्त जो भोग को काम्य समझता है उसने चित्रलेखा को अपने प्रेम और आकर्षण से हराकर उसे अपनी भोग्या बनाया। तो दूसरी ओर कुमारगिरि जिसका योग साधना काम्य है। वह अहंकार से चित्रलेखा के सौंदर्य से घायल होकर उसके सामने घुटने टेककर प्रेम का याचक बनता है। ''नहीं, तुम्हें मैं रोक नहीं सकता, शायद संसार में कोई भी व्यक्ति तुम्हें नहीं रोक सकता। निर्बल–सबल को रोक सके यह असंभव है। मैं केवल तुमसे प्रार्थना कर सकता हूँ, आग्रह कर सकता हूँ, अनुरोध कर सकता हूँ।'' बीजगुप्त की याचना चित्रलेखा के मन में कुमारगिरि के लिए प्रेम के स्थान पर दयाभाव जागृत करती है। इस प्रसंग में वर्मा जी यह प्रयास भी करते हैं कि, संयम, साधना और आडम्बर पूर्ण जीवन व्यतीत करने वाला व्यक्ति जब पति होता है, तो उसके पतन का कोई अंत नहीं होता। वह अपना औचित्य भी भूल जाता है। कुमारगिरि का असत्य बोलकर चित्रलेखा का शरीर प्राप्त करना ऐसा ही प्रयास है। कुमारगिरि के माध्यम से वर्मा जी ने उसकी खोखली आदर्शवादिता को भेदकर संसार के पटल पर खड़ा कर दिया है। दूसरी ओर चित्रलेखा को पतन की खाई से बाहर निकाल कर वर्मा जी चित्रलेखा के लिए विशिष्ट परिस्थिति निर्माण करते हुए उसके चरित्र को प्रभावी बनाकर सहानुभूति का पात्र बनाते हैं।

प्रासंगिक कथावस्तु के रूप में श्वेतांक और यशोधरा की कथा को जोड़कर बीजगुप्त के चरित्र में निखार लाया है। बीजगुप्त का मन चित्रलेखा की उदासीनता से यशोधरा की ओर आकृष्ट होता है। अपने नीरस जीवन को रसमय बनाने के लिए यशोधरा से विवाह करना चाहता है। पर उसी क्षण श्वेतांक से विवाह करने की इच्छा अपने स्वामी बीजगुप्त के सम्मुख व्यक्त करता है। बीजगुप्त अपना सारा वैभव, संपत्ति और उपाधि श्वेतांक को दान देकर भिखारी अवस्था में निकलता है। यहाँ उपन्यासकार ने बीजगुप्त को सामान्य जगत से ऊपर उठाने का प्रयास किया है। उसे महान बनाया है। बीजगुप्त समाज की दृष्टि से भोगी–विलासी दिखाई देता है, वर्मा जी ने उसे त्यागी और संमयी बना दिया है। यही चित्रलेखा उपन्यास की कथावस्तु का प्राण है। बीजगुप्त के इस महानता के सामने कुमारगिरि, चित्रलेखा, तथा श्वेतांक बौने दिखायी देते हैं। ''बीजगुप्त, तुम महान आत्मा को तुमने असंभव को संभव कर दिखाया। मनुष्य नहीं हो; तुम देवता हो। आज भारत वर्ष का सम्राट मौर्य तुम्हारे सामने मस्तक नवाता है।'' इस प्रसंग के माध्यम से वर्मा जी समाज की खोखली आदर्शवादी धारणा को तोड़कर उसका सफाया करते हैं। समाज जिसे आदर्श मानता है। उसकी पूजा–आराधना करता है। वही विलासी, पापी होता है। और जिसे समाज पापी मानता है वही व्यक्ति सहृदय, इमानदार और त्यागी होता है।

संसार में पाप की एक परिभाषा नहीं हो सकी। हम न पाप करते हैं, न पुण्य करते हैं, हम केवल वह करते हैं जो हमें करना पड़ता हैं। कथाकार पाप–पुण्य की व्याख्या करने में असमर्थ है, भले ही उसका निष्कर्ष जीवन यापन की दृष्टि से मायने रखता हो पर वह अपने–आप में पाप और पुण्य के दृष्टिकोण की व्याख्या करने में असमर्थ है। मनुष्य परिस्थितियों का दास किसी सीमा तक अवश्य है पर वे परिस्थितियाँ पाप और पुण्य का स्वयं निर्धारण करने वाली वस्तुएँ न होकर सामाजिक दृष्टिकोण का परिणाम है। इसीलिए लेखक के इस कथन के अनुसार मनुष्य कुछ नहीं करता बल्कि परिस्थितियाँ ही उससे सब करवाती हैं। वह कर्त्ता नहीं केवल साधन है। यदि मनुष्य की आंतरिक प्रवृत्तियाँ उसे ऐसे काम करने की प्रेरणा देती है जो समाज के लिए अत्यंत घातक हैं तो उसका यह कृत्य कुकृत्य ही कहा जायगा, उसे पाप कहा जाएगा पुण्य नहीं। इस संपूर्ण घटना प्रवाह को श्वेतांक और विशालदेव करीब से बीजगुप्त और कुमारगिरि के क्रिया–कलापों को देखते हैं। और दोनों ही उससे पृथक–पृथक प्रभाव ग्रहण करते हैं। श्वेतांक को अनुभव होता है कि बीजगुप्त त्यागी है, महान है, देवता है और कुमारगिरि पापी है। तथा विशालदेव को लगता है, कुमारगिरि महान, तपस्वी, योगी है और बीजगुप्त पापी है।

निष्कर्ष

भगवतीचरण वर्मा का उपन्यास 'चित्रलेखा' 1934 में प्रकाशित हुआ था। चित्रलेखा की कथा पाप और पुण्य की समस्या पर आधारित है। पाप क्या है? उसका निवास कहाँ हैं? इन प्रश्नों का उत्तर खोजने के लिए महाप्रभु रत्नांवर के दो शिष्य, श्वेतांक और विशालदेव दोनों बीजगुप्त और योगी कुमारगिरि की शरण में जाते हैं। और उनके निष्कर्षों पर महाप्रभु रत्नांबर की टिप्पणी है, ''संसार में पाप कुछ भी नहीं है, यह केवल मनुष्य के दृष्टिकोण की विषमता का दूसरा नाम है। हम न पाप करते है और न पुण्य करते हैं, हम केवल कह सकते है जो हमें करना पड़ता है।''

सन्दर्भ सूची

1. *'चित्रलेखा' उपन्यास रचियता भगवती चरण वर्मा।*
2. *दैनिक ट्रिब्यून।*
3. *पांखड़ का पर्दाफाश करती : चित्रलेखा–विजय राजबली माथुर।*
4. *हिन्दी साहित्य कोश भाग–2।*
5. *ज्ञानोदय पत्रिका।*
6. *भारतीय साहित्य का विश्व कोश।*